International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 512-513

दर्शनों का शिक्षा पर प्रभाव

डॉ. कौशल जी द्विवेदी

प्राचार्य, शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, थानाराजाजी, राजगढ़, अलवर, राजस्थान, भारत।

प्रस्तावना

पाश्चात्य भाषा में जिसे 'फिलॉसफी' कहते हैं, हिन्दी में 'दर्शन' नाम से जाना जाता है। इन दोनों शब्दों के इतिहास से प्राच्य और पाश्चात्य विचारकों के दृष्टिकोणों पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। पाश्चात्य 'फिलॉसफी' शब्द दो शब्दों के योग से बना है, अर्थात् Philo + Sophia; जहाँ 'Philos' का अर्थ होता है – प्रेम और Sophia शब्द का अर्थ है – ज्ञान या बुद्धि। इसलिए फिलॉसफी का शाब्दिक अर्थ है – ''बुद्धि – प्रेम''। अतः पाश्चात्य दार्शनिक बुद्धिमान या प्रज्ञावान व्यक्ति बनाना चाहता है। पाश्चात्य दर्शन के इतिहास से यह बात झलक जाती है कि पाश्चात्य दार्शनिक 'ज्ञान' पर अधिक जोर देता है।

दर्शन शब्द 'दृश' धातु से निकला है जिसका अर्थ 'देखना' है। 'दृश' धातु का प्रेक्षण अर्थ है अर्थात् 'प्रकृष्ट रूप से देखना'। अतः 'ज्ञान – दृष्टि' से देखना ही दर्शन शब्द का मूलार्थ है। मनुष्य बुद्धि की सहायता से जीव एवं जगत् के विषय में युक्तिपूर्वक ज्ञान प्राप्त कर सकता है। इस दृष्टि से भी कहा गया है कि ''दर्शन युक्तिपूर्वक'' ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न है।' दर्शन एक ऐसी 'दिव्य दृष्टि' प्रदान करता है जो आत्म–दर्शन या 'तत्व–दर्शन' को सम्भव बनाती है। इस प्रकार दर्शन सम्पूर्ण जगत के बारे में एक व्यापक दृष्टिकोण है जो उसमें सम्मिलित सभी विषयों की न केवल व्याख्या करता है, अपितु मानव को समुचित मार्ग पर चलने के लिए नवनिर्माण एवं पुनरूत्थान की ओर प्रेरित करता है। अतः जीव जगत की व्याख्या और तदनुरूप मानव – समाज की संरचना ही दर्शन है।

दर्शन की प्रमुख परिभाषाओं को तीन खण्डों में विभाजित किया जा सकता है –

1. दर्शन और विज्ञान का सम्बन्ध सूचक,
2. दर्शन का अलौकिक अनुभूतियों और परम – तत्व से सम्बन्ध बतलाने वाल,
3. प्रमाण–शास्त्र से दर्शन का सम्बन्ध बतलाने वाली।

1. दर्शन और विज्ञान का सम्बन्ध सूचक

कई दार्शनिकों ने दर्शन–शास्त्र को विज्ञान का ही विकसित रूप माना है –

(क) फ्रांसीसी दार्शनिक कामे का मत है – ''दर्शन–शास्त्र विज्ञानों का विज्ञान है।''
(ख) हरबर्ट स्पेन्सर का मत है – ''दर्शन–शास्त्र विज्ञानों का समन्वय अथवा विश्वव्यापक विज्ञान अथवा महा–विज्ञान है।''
(ग) पौलसेन का मत है – ''दर्शन–शास्त्र समस्त विज्ञानों का योग है।''
(घ) बी.रसेल का मत है – ''दर्शन–शास्त्र विज्ञान के आधारभूत सिद्धान्तों का तार्किक अध्ययन है।''
(ड़) विटगन्सटीन का मत है – ''दर्शन–शास्त्र विज्ञान के वाक्यों के अर्थों अथवा भाषा की तार्किक व्याख्या है।''

2. दर्शन का अलौकिक अनुभूतियों और परम–तत्व से सम्बन्ध बतलाने वाले

इस वर्ग में दर्शन की वे परिभाषाएं आती हैं जो उसे आलौकिक तथा शाश्वत ज्ञान तक ही सीमित करती हैं –

(क) प्लेटो का मत है – ''दर्शन का प्रयोजन/उद्देश्य शाश्वत तत्व का अथवा वस्तुओं के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान है।''
(ख) अरस्तु का मत है – ''दर्शन वह विज्ञान है, जो परम तत्व के यथार्थ स्वरूप की जांच करता है।''
(ग) हैगिल का मत है – ''दर्शन – शास्त्र शाश्वतता का तत्व – दर्शन है।''
(घ) ब्रैडली का मत है – ''दर्शन–शास्त्र अथवा विज्ञान, दृश्य–जगत की अपेक्षा वास्तविक तत्व को जानने का प्रयास है।''

3. प्रमाण– शास्त्र से दर्शन का सम्बन्ध बतलाने वाली

वे परिभाषाएं हैं जो दर्शन–शास्त्र को एक प्रकार का प्रमाण–शास्त्र अथवा ज्ञान–शास्त्र या संबंधित–शास्त्र बना देती है ; तथा जिसमें तत्वों की व्याख्या अथवा लौकिक ज्ञान के समन्वय को दर्शन के लक्ष्य के विरुद्ध बतलाया जाता है –

(क) कान्ट का मत है – ''दर्शन–शास्त्र ज्ञान अथवा बोध –प्राप्ति की क्रिया का विज्ञान एवं उसकी समीक्षा है।''
(ख) फिश्ते का मत है – ''दर्शन–शास्त्र ज्ञान अथवा विद्या सम्बन्धी विज्ञान है।''

शिक्षा और दर्शन का सम्बन्ध

दर्शन और शिक्षा का आपस में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। दर्शन जीवन की महानता तथा अपेक्षित आदर्शों को आयोजित करता है ओर इस आयोजन की पूर्ति का साधन है – शिक्षा। शिक्षा और दर्शन दोनों एक–दूसरे पर आश्रित हैं। किसी भी काम को पूरा करने के लिए दो बातें आवश्यक हैं – योजना पक्ष और व्यवहार पक्ष।

यहाँ दर्शन योजना पक्ष है। उसका काम है – जीवन के लक्ष्यों या उद्देश्यों को निर्धारित करना और विकास की चरम सीमा को भिन्न–भिन्न दृष्टियों से देखना। इसके उपरान्त शिक्षा (व्यावहारिक पक्ष) उन लक्ष्यों तथा विकासों का प्रत्यक्ष सफल अथवा असफल रूप प्रस्तुत करती है। डॉ. एस. राधाकृष्णन का मत है, ''दर्शन यथार्थता के स्वरूप का तार्किक ज्ञान है।'' इसी कारण कहा जाता है कि शिक्षा और दर्शन में घनिष्ठ सम्बन्ध है। शिक्षा के अन्तर्गत कहा जा सकता है कि शिक्षा की प्रक्रिया व्यक्ति को अपने जीवन को पूर्ण बनाने का प्रयास करती है। व्यक्ति को पूर्ण बनाने तथा उसके विकास के लिए अनुभव आवश्यक होता है। दर्शन अनुभव प्राप्त करने में विशेष रूप से सहायता प्रदान करता है। स्पष्ट है कि शिक्षा और दर्शन में घनिष्ठ सम्बन्ध है।

शिक्षा और दर्शन का सम्बन्ध प्राचीन काल से चला आ रहा है।

शिक्षा, शिक्षा दर्शन सम्बन्धी समस्याओं का दर्शन की दृष्टि से विवेचन करती रही है। शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं का हल जीवन दर्शन की सहायता से तलाश किया जाता है। दर्शन – शिक्षा को प्रभावित करता है और शिक्षा दर्शन को। दर्शन अध्यापक के कार्य को सुगम बना देता है। यही कारण है कि प्राचीन समय में प्रत्येक दार्शनिक जैसे सुकरात, प्लेटो, अरस्तु तथा लॉक आदि दार्शनिक महान् शिक्षाशास्त्री भी थे। अतः स्पष्ट है कि शिक्षा दर्शन पर आश्रित है।

ए.एन. व्हाइट, हैड तथा हक्सले, एच.जी. वेलस, बर्टेण्ड रसेल आदि दार्शनिक भी शिक्षा –शास्त्री हुए है। हरबर्ट ने दर्शन और शिक्षा का सम्बन्ध बताते हुए लिखा है, ''शिक्षा का छुट्टी मनाने का अवसर ही कहाँ है, जब तक कि दर्शन की गुत्थियाँ सदैव के लिए न सुलझ जावें।''

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि दर्शन और शिक्षा आपस में घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। समाज की आवश्यकताओं के अनुसार दार्शनिक विचारधाराएँ उत्पन्न होती हैं और उसी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य तथा प्रणाली निश्चित की जाती हैं।

जे.एस.रॉस ने दर्शन और शिक्षा का सम्बन्ध बताते हुए लिखा है – ''दर्शन और शिक्षा एक सिक्के के दो पहलुओं के समान हैं। एक में दूसरा निहित है। दर्शन जीवन का विचारात्मक पक्ष है और शिक्षा क्रियात्मक पक्ष।''

प्रमुख दार्शनिकवाद जिनसे शिक्षा प्रभावित होती रही है

आदर्शवाद

शिक्षा जगत में जिन–जिन विचारधाराओं का प्रादुर्भाव हुआ उनमें आदर्शवादी विचारधारा समस्त दार्शनिक विचारधाराओं में अति प्राचीन है। आदर्शवादी ईश्वरीय सता में विश्वास तथा जीवन में उच्चादर्शों को स्थान देता है। आदर्शवादी वह विचारधारा है जो यह मानती है कि अन्तिम सत्ता आध्यात्मिक या मानसिक है।

प्रकृतिवाद

18वीं शताब्दी में यूरोप में सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्रांति हुई जिसके परिणामस्वरूप प्रकृतिवादी विचार–धारा का उदय हुआ, रूसो और वाल्टेयर मुख्य प्रकृतिवाद के प्रमुख समर्थक थे। इनके विचारों के अनुसार मनुष्य स्वतंत्र पैदा होता है किन्तु वह जीवन के हर क्षेत्र में बंधनों से युक्त है। प्रकृतिवाद विचार–धारा, आदर्शवादी विचार–धारा से पूर्णतः भिन्न है।

प्रकृति को पूर्ण वास्तविकता मानता है। जो बाते प्रकृति के नियम से स्वतंत्र जान पड़ती है, जैसे मानव जीवन या कल्पना की उपज, वे भी वास्तव में प्रकृति की योजना में आती है। प्रत्येक वस्तु प्रकृति से पैदा होती है और अन्त में उसका उसी में विलय हो जाता है। प्रकृतिवाद एक ऐसा भौतिकवादी दर्शन है जो सम्पूर्ण सृष्टि की उत्पत्ति के लिए प्रकृति को उतरदायी ठहराता है। इस दर्शन के अनुयायियों का ईश्वर की सत्ता, आत्मा की अमरता आदि पर विश्वास नहीं है। इनके अनुसार सभ्यता के विकास के कारण प्रकृति और मनुष्य का सम्बन्ध समाप्त हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप मानव पीड़ित और दुःखी है।

प्रयोजनवाद

प्रयोजनवादी दार्शनिक विचारधारा वर्तमान युग की समस्त दार्शनिक विचारधाराओं में अति महत्वपूर्ण है। इस विचारधारा के जन्मदाता प्रसिद्ध दार्शनिक चार्ल्स पियर्स थे। विलियम जेम्स, जॉन डीवी तथा शिलर ने शिक्षा के क्षेत्र में इस विचारधारा को महत्वपूर्ण स्थान दिया।

प्रयोजन शब्द की उत्पत्ति

'प्रयोजनवाद' अंग्रेजी भाषा के शब्द 'Pragmatism' का हिन्दी अनुवाद है। 'Pragmatism' शब्द की व्युत्पति ग्रीक (युनानी) भाषा के 'Pragma' शब्द से हुई। 'Pragma' का अर्थ है – "a thing done, business, effective action" जिसका हिन्दी रूपान्तर किया गया काम, व्यवसाय, प्रभावपूर्ण कार्य होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार 'Pragmatism' शब्द की व्युत्पति यूनानी भाषा के शब्द 'Pramitikos' से हुई है जिसका अर्थ होता है 'Practicable' इसका हिन्दी अनुवाद है 'व्यावहारिक'। इस प्रकार 'Pragmatism' शब्द का अर्थ हुआ ''व्यावहारिकता''।

प्रयोजनवाद का अर्थ

उपर्युक्त शाब्दिक विवेचन के आधार पर – 'प्रयोजनवाद वह विचारधारा है जो उन्हीं बातों को सत्य मानती है जो व्यावहारिक जीवन में काम आ सके।' प्रयोजनवादी अमूर्त वस्तुओं, शाश्वत सिद्धांतों को और पूर्णता तथा उत्पत्ति में विश्वास नहीं करते हैं। दूसरे शब्दों में, यह विचार–धारा उन्हीं तथ्यों को सत्य रूप में ग्रहण करती है जो व्यवहार में आ सकें।

इस विचारधारा के अनुसार सत्य देश, काल, परिस्थिति विशेष में उपयोगी हो सकती है, दूसरी परिस्थिति में नहीं। अतः जहाँ जो उपयोगी हो, उसे उसी प्रकार व्यावहारिक रूप में परिवर्तित कर लेना चाहिए।

सन्दर्भ

1. पाण्डेय, रामषकल – उदीय मान भारतीय समाज और षिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. सिंह, रामपाल– षिक्षा और भारतीय समाज, अग्रवाल प्रकाषन, आगरा।
3. महतो, एस.के.– षिक्षा के दार्षनिक परिप्रेक्ष्य, राधा प्रकाषन, आगरां
4. त्यागी एवं महतो– समाज और षिक्षा, अरिहंत पब्लिकेषन, जयपुर।
5. शर्मा आर.एस.– षिक्षा के मनो–सामाजिक सिद्धान्त, आर. बुक डिपो, मेरठ।